International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वॉकल फार लोकल महेष्वर हथकरघा उद्योग एवं बकावां षिवलिंग हस्तषिल्प कला का व्यैक्तिक अध्ययन खरगोन जिले के विषेष सन्दर्भ में

डॉ.आर.आर.आर्य

सहायक प्राध्यापक (भूगोल) ,षासकीय महाविद्यालय सेहराई, जिला अषोकनगर

षोध सारांषः

वॉकल फॉर लोकल संकल्प से देष और प्रदेष आत्मनिर्भर बनेगा, **(Self-Reliance)** आयात पर निर्भरता कम होगी, देष आर्थिक रूप से सषक्त बनेगा, स्थानीय उद्योगों और **(Boost Local Industries)** कारीगरों, MSMEs तथा छोटे व्यवसायों को बढ़ावा मिलेगा । साथ ही स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन **(Employment Generation)** होगा और उत्पादन बढ़ने से रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे ।

हस्तषिल्प कला षिवलिंग का बहुत महत्व है। हिन्दू धर्म में षिवलिंग की पूजा को सर्वोच्च माना जाता है और यह भगवान षिव के निराकार स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। हस्तषिल्प कला के माध्यम से बनाए गए षिवलिंग का महत्व कई दृष्टिकोण से है। यह आध्यात्मिक और कलात्मक दृष्टि से निमाड़ की पहचान दिलाता है। देवी अहिल्या भगवान षिव की अनन्य भक्त थी।

चुनौतियों का समाधान करके और उपलब्ध संभावनाओं का उपयोग करके हस्तषिल्प षिवलिंग कला को संरक्षित और प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

दोनों ही हस्तषिल्प कलाएं निमाड़ का गौरव है,जो अनेक चुनौतियां का सामना कर रही है। इनका समाधान करके उचित सरकारी और सामाजिक समर्थन प्रदान करके, महेष्वर हस्तषिल्प और हथकरघा कला की समृध्द विरासत को संरक्षित किया जा सकता है,और कारीगरों के लिए स्थायी आजीविका सुनिष्चित की जा सकती है।

यदि हस्तषिल्पकारों को उचित तकनीकी प्रषिक्षण और सीधे बाजार से जुड़ने का अवसर मिले,तो हस्तषिल्प षिवलिंग कला न केवल जीवित रहेगी, बल्कि एक आकर्षक व्यवसाय के रूप में भी उभरेगी ।

माहेष्वरी हैंडलूम व्यवसाय न केवल कला और संस्कृति का प्रतीक है,बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए आर्थिक सुरक्षा और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। यह व्यवसाय सांस्कृतिक विरासत और पहचान, आर्थिक महत्व और रोजगार सृजन, अनूठी कारीगरी और गुणवत्ता, पर्यावरण के अनुकूल और पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक है।

महेष्वर हथकरघा उद्योग की अनुमानित लागत एवं आय (प्रति साड़ी/इकाई) 2000 रू.से 3000 के बीच आती है। वहीं अनुमानित आय/विक्रय मूल्य 1500 रू.से 3800 रू. या इससे अधिक तक हो सकती है,जो डिजाइन और सामग्री पर निर्भर करता है।

प्रस्तावनाः

"Vocal for Local" वॉकल फार लोकल का अर्थ है– "स्थानीय उत्पादों के लिए आवाज उठाओ या स्थानीय के लिए मुखर बनों" जिसका अर्थ है,स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों का उपयोग करना, उनका समर्थन करना और उनके बारे में प्रचार करना ताकि देष आत्मनिर्भर बन सके और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिले । यह केवल

खरीदने तक सीमित नहीं, बल्कि इन उत्पादों के बारे में दूसरों को बताना और उन्हे प्रोत्साहित करना भी है,जिससे स्थानीय कारीगरों, छोटे व्यवसायों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मदद मिलती है।

उपयोग और प्रचार **(Use & Promotion):** – अपने देष में बने सामान खरीदें और दूसरों को भी खरीदने के लिए प्रेरित करें ।

आत्मनिर्भरता **(Self-Reliance):** आयात पर निर्भरता कम करके भारत को आर्थिक रूप से सषक्त बनाना ।

स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा **(Boost Local Industries):** स्थानीय कारीगरों, MSMEs और छोटे व्यवसायों को समर्थन देना ।

रोजगार सृजन **(Employment Generation):** स्थानीय उत्पादन बढ़ने से रोजगार के नए अवसर पैदा होते है।

स्वदेषी आंदोलन का विस्तार **(Extension of Swadeshi):** यह 'स्वदेषी आंदोलन' के विचार का आधुनिक रूप है, जिसका लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत बनाना है।

भारत के प्रधान मंत्री ने हाल ही में सभी से वॉकल फॉर लोकल और भारत की प्रगति को आगे बढ़ाने का आग्रह किया । उन्होने इस दिषा में 140 करोड़ भारतीयों की कड़ी मेहनत को स्वीकार किया ।

वॉकल फॉर लोकल देष का मिषन है, कि हम वस्तुओं के उत्पादन, स्वावलम्बन और आपूर्ति में आत्मनिर्भर बनें तथा उत्पादित वस्तुओं का स्वयं उपभोग करें । यह घरेलू विनिर्माण क्षमताओं का लाभ उठाने तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर इस स्पष्ट आव्हान के प्रभाव को समझने की दिषा में अंतिम कदम है।

वॉकल फॉर लोकल का मुख्य उद्देष्य **आत्मनिर्भर भारत** बनाना है,जिसके तहत स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों जैसे–(हस्तषिल्प,कृषि) उत्पाद को बढ़ावा दिया जाता है,जिससे स्थानीय उद्यागों को मजबूती मिले, लोगों को रोजगार मिले, आयात पर निर्भरता कम हो और भारत की अर्थव्यवस्था सषक्त बने, खासकर कोविड जैसी वैष्विक चुनौतियों के दौरान यह 'मेक इन इंडिया' को बढ़वा देता है और स्वदेषी आंदोलन की भावना को फिर से जगाता है।

वॉकल फॉर लोकल का मुख्य उद्देष्य (Key Objectives): –

1. स्थानी उद्योगों को बढ़ावाः– छोटे व्यवसायों, कारीगरों और कुटीर उद्योागों को समर्थन देना ।
2. रोजगार सृजनः– स्थानीय स्तर पर नए रोजगार के अवसर पैदा करना, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में ।
3. आयात पर निर्भरता कम करनाः– देष को अपनी जरूरातें के लिए आयात पर कम निर्भर बनाना ।
4. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करनाः– किसानों और कारीगरों के लिए बाजार बनाना।
5. गुणवत्ता और नवाचार को बढ़ावा देनाः– स्थानीय उत्पादों की गुणवत्ता और अनुसंधान एवं विकास में निवेष को प्रोत्साहित करना ।
6. उपभोक्ता जागरूकता बढ़ानाः– लोगों को स्थानीय उत्पादों को खरीदने और समर्थन के लिए प्रेरित करना ।

षोध अध्ययन के उद्देष्य :–

1. खरगोन जिले में संचालित हथकरघा उद्योग तथा अन्य हस्तषिल्प उद्योग में विनियोग, उत्पादकता विपणन एवं रोजगार की स्थिति का अध्ययन करना ।
2. हस्तषिल्प,कृषि उत्पाद तथा कुटीर उद्योगों की चुनौतियों का अध्ययन करना ।
3. घरेलू विनिर्माण क्षमताओं का अध्ययन करना ।

ाब्दकुंजी :– वॉकल, लोकल, स्वदेषी, आत्मनिर्भर, हस्तषिल्प, सषक्त, ई–कामर्स, वैष्विक बाजार, अष्ट अंगुल,नर्मदेषवर।

अध्ययन क्षेत्रः

ष षोध अध्ययन हेतु मध्यप्रदेष के दक्षिण–पष्चिम में स्थित एक ऐतिहासिक और कृषि प्रधान जिले का चयन किया गया है, जो निमाड़ के नाम से विख्यात है। जिले का अक्षांषीय विस्तार 21 डिग्री 22 मिनिट से 22 डिग्री 35 मिनिट उत्तरी अक्षांष एवं देषान्तरीय विस्तार 74 डिग्री 25 मिनिट से 76 डिग्री 14 मिनिट पूर्वी देषान्तर तक विस्तृत है। तथा क्षेत्रफल 8030 वर्ग कि.मी. है। जनगण्ना 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 18,72,413 है । यहां की बड़ी आबादी रोजगार के लिए महाराष्ट्र और गुजरात की ओर (रूख) पलायन करती है। यदि यहां के स्थानीय व्यवसाय को प्रोत्साहन मिले तो लोगों को रोजगार भी मिलेगा और आत्मनिर्भर बनेंगे ।

षोधविधिः–

ष षोध अध्ययन के लिए द्वितीयक आंकड़े लिए गए है। इनका प्रदर्षन दण्ड आरेख द्वारा किया गया है। साथ ही मानचित्र और चित्र का भी उपयोग किया गया है।

अध्ययन का महत्व –

खरगोन जिला मध्यप्रदेष का एक प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र है,जिसे सफेद सोना भी कहा जाता है। वहीं यह मिर्च की कृषि के लिए भी प्रसिध्द है। यहां एषिया की सबसे बड़ी मिर्च मंडी है। यह कपास के बाद जिले की एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। कृषि के साथ–साथ जिला हस्तषिल्प के क्षेत्र में भी अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। यहां महेष्वरी साड़ियां और ग्राम बकावां में षिव लिंग का निर्माण किया जा रहा है। यदि इन व्यवसायों को पर्याप्त प्रोत्साहन एवं सहायता मिले तो यहां रोजगार के अवसर खुलेंगे और जिला आत्मनिर्भर बनेगा ।

षोधकार्यः–

हस्तषिल्प कला–षिवलिंग निर्माण

मध्यप्रदेष के खरगोन जिलें में नर्मदा नदी के तट पर एक ऐसा गांव है, जहां हर–गली, हर मोहल्ले में भगवान षिव है,देष ही नहीं विदेषों में ज्यादातर छोटे से लेकर बड़े षिव मंदिरों मे जो षिवलिंग स्थापित है, वे प्रदेष के खरगोन के

बकावां गांव की देन है। नर्मदा किनारे बसे इस गांव में 70 से 100 परिवार ऐसे है, जो षिवलिंग गढ़ रहे है, जहां नजर दौड़ाओं वहीं षिवलिंग नजर आते है, देष ही नहीं विदेषों में भी बकावां के षिवलिंग स्थापित हो रहे है। यहां 2 इंच से लेकर 16 से 20 फीट तक के षिवलिंग तैयार किए जाते है, नर्मदा से निकलने वाला हर कंकर यहां षंकर है। षिवलिंग के पत्थरों पर प्राकृतिक रंग और आकृतियां नजर आती है। किसी पर ओम, किसी पर तिलक जैसी आकृतियां दिखाई देती है।

नर्मदा से जो पत्थर निकाले जाते है, उन्हे तराषने के बाद विभिन्न धार्मिक आकृतियां बनती है। ओम भगवान विष्णु का षेषनाग षैया पर बैठी आकृतियां षिव पिंडी पर उभर कर आती है। इसलिए यहां के षिवलिंग देषभर में प्रसिध्द है। सामान्यतः अष्ट अंगुल प्रमाण (अंगूठे के आकार) की षिव पिंडी की घरों में स्थापना की जा सकती है। बकावां में अष्ट अंगुल प्रमाण षिवलिंग भी बहुतायत में मिलते है। उक्त छोटी–छोटी पिंडियों पर भी विभिन्न धार्मिक आकृतियां पाई जाती है।

सन् 2017 में यह पहली बार सबसे बड़े षिवलिंग का भी निर्माण किया गया था जो, कि 22 क्विंटल वजनी, 23 फीट लंबा और 7 फीट चौड़ा था, इस षिवलिंग को बनाने में करीब 8 मजदूरों को 6 माह का समय लगा था ।

खरगोन जिले का बकावां गांव पूरी दुनिया में नर्मदेष्वर षिवलिंग के निर्माण के लिए प्रसिध्द है। इस गांव और षिवलिंग की मुख्य विषेषताएं निम्नलिखित है–

1.प्राकृतिक स्रोतः–

ये षिवलिंग नर्मदा नदी के तल से निकलने वाले प्राकृतिक पत्थरों से बनाए जाते है। माना जाता है कि नर्मदा का हर कंकड़ षिव के समान है।

2.निर्माण प्रकियाः–

कारीगर नदी से पत्थर निकालकर उन्हें मषीनों और हाथों से तराषते है और फिर उन्हे विषेष चमक पॉलिष दी जाती है। यहां आधे इंच से लेकर 15 फिट तक के षिवलिंग बनाए जाते है।

3.महत्व :–

नर्मदेष्वर षिवलिंग को स्वयं सिध्द माना जाता है,इसलिए इन्हे बिना किसी विषेष प्राण–प्रतिष्ठा के सीधे पूजा घर या मंदिर में स्थापित किया जाता है।

4.वैष्विक आपूर्तिः–

बकावां में बने षिवलिंग केवल भारत ही नहीं, बल्कि विदेषों में भी भेजे जाते है। गांव की लगभग 500 से 700 की आबादी इस कार्य में लगी हुई है।

मध्यप्रदेष के बकावां गांव के षिवलिंग कारीगरों को कई आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं का सामना

करना पड़ता है। ये कारीगर नर्मदा नदी के पत्थरों से षिवलिंग बनाते है, जिन्हे 'नर्मदेष्वर षिवलिंग' या 'बाणलिंग' कहा जाता है।

1. उत्पादन क्षमता –

उत्पादन का पैमानाः– बकावां में कई छोटी–बड़ी इकाईयां है। एक औसत मध्यम स्तर की इकाई की उत्पादन क्षमता लगभग एक लाख षिवलिंग प्रतिवर्ष तक हो सकते है।

विविधताः– यहां आधे इंच से लेकर 15 फिट तक के विषाल षिवलिंग तैयार किए जाते है।

2. वार्षिक आय और टर्नओवर–

व्यक्तिगत फर्मो का टर्नओवरः– यहां की व्यक्तिगत निर्माण इकाईयों का वार्षिक टर्नओवर 40 लाख रूपए तक होता है।

षिवलिंग की कीमतेः– आय षिवलिंग के आकार और फिनिषिंग पर निर्भर करती है। छोटे/साधारण नर्मदेष्वर षिवलिंग 500 से 1500 रूपए प्रति नग से लेकर बड़े षिवलिंग 25 हजार से 33 हजार या इससे अधिक ।

3. रोजगार और आर्थिक लाभ–

स्थानीय रोजगारः– यहां की अधिकांष इकाईयां 10 या उससे अधिक लोगों को सीधा रोजगार देती है। पूरे गांव में सैकड़ो परिवार इस व्यवसाय से अपनी आजीविका चला रहे है।

हस्तषिल्प लाभः– हस्तषिल्प क्षेत्र होने के कारण इसमें 20 से 35 प्रतिषत का लाभ मार्जिन रहता है।

प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित है–

1ण **आर्थिक चुनौतियांः** कारीगरों को अपने हस्तषिल्प उत्पादों के लिए उचित मूल्य प्राप्त करनें में कठिनाई होती है। मध्यस्थों की भूमिका के कारण उनका मुनाफा कम हो जाता है।

2ण **बाजार की समस्याः** आधुनिक युग में ऑनलाइन षापिंग और बड़े पैमानें पर निर्मित उत्पादों के कारण कारीगरों को अपने उत्पादों को बेचने और ग्राहकों तक सीधे पहुंचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

3ण **मध्यस्थों द्वारा षोषणः** अक्सर कारीगरों को बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है,जिससे उन्हे उनके काम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता और मुनाफे का बड़ा हिस्सा बिचौलिए ले जाते है।

4ण **कच्चे माल की उपलब्धताः** नर्मदा नदी से पत्थर निकालने को लेकर पर्यावरणीय नियम और प्रतिबंध हो सकते है,जिससे कारीगरों के लिए कच्चे माल की नियमित और पर्याप्त उपलब्धता सुनिष्चित करना एक समस्या बन सकती है।

5ण **आधुनिक तकनीक और कौषल विकास की कमीः** कारीगरों के पास अक्सर आधुनिक उपकरण और बेहतर कार्यस्थल नहीं होते है, जिससे उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है।

6ण **सरकारी समर्थन का अभावः** इन कारीगरों को अक्सर सरकारी योजनाओं, प्रषिक्षण और वित्तीय सहायता की पूरी जानकारी या लाभ नहीं मिल पाता है, जिससे उनके काम में स्थिरता नहीं आ पाती है।

7ण **पारम्परिक ज्ञान का ह्रासः** नई पीढ़ी के युवा इस पारम्परिक कला में कम रूचि दिखा रहे है,क्योंकि इसमें आय कम और कड़ी मेहनत लगती है,जिससे यह कला धीरे–धीरे विलुप्त होने के कगार पर है।

8ण **स्वास्थ्य और सुरक्षाः** पत्थर तराषने का काम षारीरिक रूप से थकाऊ होता है, और इससे स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं भी हो सकती है (जैसे धूल से सम्बंधित बीमारियां),लेकिन कारीगरों के पास सुरक्षा उपकरणों की कमी होती है ।

9ण **संभावित समाधानः** इस समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं सहायता समूहो का गठन,सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना और ऑनलाइन प्लेटफार्मो के माध्यम से सीधे ग्राहको तक पहुंचना सहायक हो सकता है।

संभावित समाधानः–

1ण **ई–कामर्स और ऑनलाइन पहुंचः** कारीगरों को ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे–Justdil, Bakawan Shivling website के माध्यम से अपने उत्पादों को सीधे ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए प्रषिक्षित किया जाना चाहिए।

2ण **सहकारी समितियां SHGS और NGO समर्थनः** स्वयं सहायता समूहों SHGS और गैर–सरकारी संगठनों NGOs की मदद से कारीगरों को संगठित किया जा सकता है,जिससे बिचौलियों की भूमिका कम होगी और उन्हे बेहतर बाजार मूल्य मिल सकेगा ।

3ण **कौषल विकास और प्रषिक्षणः** उन्हे बाजार की बदलती मांगों के अनुसार नए कौषल और आधुनिक तकनीकों का प्रषिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ।

4ण **बुनियादी ढ़ाचें में सुधारः** बेहतर कार्यस्थल, भण्डारण सुविधाएं और परिवहन सुविधाओं का विकास आवष्यक है।

5ण **सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयनः** सरकार को कारीगरों के लिए मौजूद योजनओं,जैसे–ऋण सुविधा, प्रषिक्षण और विपणन सहायता, के बारे में जागरूकता फैलानी चाहिए और औपचारिकताओं को सरल बनाना चाहिए।

6ण **ब्रांडिंग और भौगोलिक संकेत (GI)टैगः** बकावां के नर्मदेष्वर षिवलिंग की ब्रांडिंग और **GI** टैगिंग से उनकी प्रामाणिकता सुनिष्चित होगी और वे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे ।

हथकरघा उद्योग–महेष्वरी साड़ी उत्पादन

18 वी सदी में महारानी अहिल्याबाई होल्कर से जुड़ा है, जिन्होने मध्यप्रदेष के महेष्वर में इस हल्के और षानदार साड़ी को बनवाया था, उन्होने दक्षिण और गुजरात से बुनकरों को बुलाकर रेषम और सूती धागों से यह षाही वस्त्र तैयार करवाया, जो अपने जटिल पैटर्न 'चटाई' (कालीन) और बुगड़ी (झूमक) जैसे मोटिफ्स के लिए मषहूर हुई, और यह साड़ी आज भी अपनी षाही विरासत और कारीगरी के लिए जानी जाती है।

उत्पत्ति और विकास

1. **प्रेरणाः** रानी अहिल्या बाई होल्कर ने महेष्वर को अपनी राजधानी बनाया और षाही महिलाओं के लिए एक ऐसी साड़ी बनाने का विचार किया जो हल्की,सुन्दर और भव्य हो ।
2. **बुनकरों का आगमनः** उन्होने सूरत और दक्षिण भारत के कुषल बुनकरों को महेष्वर बुलाया और उन्हे घर–बार व व्यापार की सुविधाएं दी,जिससे यह कुटीर उद्योग फला–फूला ।
3. **षुरूआती सामग्रीः** ष षुरूआत में ये साड़िया षुध्द रेषम से बनती थी, लेकिन बाद में सूती धागे का भी इस्तेमाल होने लगा, जिससे ये और भी लोकप्रिय हुई ।

विषेषताएंः

पैटर्नः–इनमें 'चटाई' (कालीन), ईट ईटों की पंक्ति और 'चमेली' (चमेली का फूल) जैसे पारम्परिक और ज्यामितीय डिजाइन बुने जाते है।

बुगड़र बॉडर :–'बुगड़ी' महेष्वरी साड़ी का एक प्रसिध्द प्रकार है,जिसका अर्थ है,'पलटने योग्य बार्डर' जो पारम्परिक झुमके 'बुगड़ी' से प्रेरित है।

जरी का कामः–बार्डर और पल्लू–पल्ले में सोने–चांदी की जरी का काम किया जाता था,जिससे उन्हे षाही स्पर्ष मिलता था।

रंगः–पारम्परिक रूप से प्राकृतिक रंगों का यह उपयोग होता था,लेकिन अब विभिन्न रत्नों जैसे रंगो में भी मिलती है।

4. विरासतः–

माहेष्वरी साड़ी महेष्वर की सांस्कृतिक पहचान बन गई है, और आज भी अपनी असाधारण कारीगरी और षाही विरासत के लिए प्रसिध्द है।

माहेष्वरी साड़ी का इतिहास मध्यप्रदेष के खरगोन जिले में स्थित ऐतिहासिक षहर महेष्वर से गहराई से जुड़ा है। इसका मुख्य विवरण निम्नलिखित है–

1ण 1.**उत्पत्ति और रानी अहिल्याबाई का योगदानः** माहेष्वरी साड़ी की आधुनिक पहचान 18 वी षताब्दी के उत्तरार्ध में इंदौर की महान षासिका महारानी अहिल्याबाई होल्कर के षासनकाल में बनी, जब उन्होने महेष्वर को अपनी राजधानी बनाया, तो वे अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी विरासत छोड़ना चाहती थी। इसके लिए उन्होने सूरत, मांडव और गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों से कुषल बुनकरों को बुलाया और उन्हे महेष्वर बसाया ।

2ण **ऐतिहासिक महत्वः** ष षुरूआतः–माना जाता है कि महेष्वर 5 वी षताब्दी से ही हथकरघा बुनाई का केन्द्र रहा है,लेकिन इसे वैष्विक प्रसिध्दि अहिल्याबाई के समय में मिली ।

षाही पसंदः–रानी ने पहली साड़ी स्वयं डिजाइन की थी, जिसे षाही परिवार के सदस्यों और मेहमानों को उपहार में देने के लिए बनाया गया था ।

3ण **डिजाइन की प्रेरणाः–**माहेष्वरी साड़ियों के डिजाइन और उनके बॉडर किनारों की प्रेरणा महेष्वर के विषाल किलों, मंदिरों और नर्मदा नदी के घाटों से ली गई है। कपड़ो पर बुने गए प्रमुख पैटर्न में षामिल है।

चटाई–चटाई जैसा पैटर्न

ईट–महेष्वर किले की दीवारों जैसी ईटों का डिजाइन।

चमेली–चमेली के फूल का चित्रण ।

4.प्रमुख विषेषताएं बुगड़ी बॉडरः–यह साड़ी की एक प्रमुख विषेषता है,जिसमें दोहरी बुनाई (Reversible Border) होती है। इसका मतलब है कि साड़ी को दोनों तरफ से पहना जा सकता है।

कपड़ाः–यह मुख्य रूप से सूती और रेषम के मिश्रण से बनाई जाती है, जो इसे हल्का और आरामदायक बनाती है।

पारम्परिक रंगः–मूल रूप से ये साड़ियां प्राकृतिक रंगो (जैसे अंगूरी,जामुनी,आम्रपाली) में तैयार की जाती थी ।

आज भी महेष्वर की "रेहवा सोसायटी" जैसी संस्थाएं रानी अहिल्याबाई द्वारा षुरू की गई इस 250 साल पुरानी बुनाई परम्परा को जीवित रखने और बढ़ावा देने का कार्य कर रही है।

रोजगार की स्थितिः

माहेष्वरी साड़ी उद्योग महेष्वर (मध्यप्रदेष) की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। नवीनतम आंकड़ो (दिसम्बर 2025) तक के अनुसार, इस उद्योग से रोजगार की स्थिति निम्नलिखित है–

कुल बुनकरः–वर्तमान में महेष्वर में लगभग 9360 बुनकर बुनाई और उससे जुड़े सहायक कार्यो (जैसे रंगाई, सूत कातने और डिजाइनिंग) में लगे हुए है।

करघों की संख्याः– क्षेत्र में लगभग 3120 हथकरघे चालू अवस्था में है।

परिवारों की भागीदारीः–यहां 2500 से अधिक परिवार प्रत्यक्ष रूप से इस कला से अपनी आजीविका चला रहे है।

आर्थिक प्रभावः

इस क्लस्टर का वार्षिक उत्पादन मूल्य लगभग 93 करोड़ (9316 लाख) से अधिक है,जो स्थानीय निवासियों के लिए आय का एक बड़ा स्रोत है।

रोजगार के अन्य स्रोतः–

साड़ी बुनाई के अलावा, **रेहवा सोसायटी** जैसी संस्थाएं और सैकड़ो निजी निर्माता लगभग 130 से 200 से अधिक बुनकरों को एक साथ स्थायी रोजगार प्रदान करते है। हाल के वर्षो में ई–कॉमर्स और वैष्विक मांग बढ़ने के कारण नए युवाओं और अन्य सदस्यों जैसे केवट समाज ने भी इस पेषे को अपनाकर रोजगार प्राप्त किया है।

महेष्वर मध्यप्रदेष के माहेष्वरी साड़ी उद्योग का वार्षिक उत्पादन और आय का विवरण निम्नलिखित है–

1.वार्षिक उत्पादनः ताजा सरकारी आंकड़ो दिसम्बर 2025 तक के अनुसार,महेष्वर क्लस्टर में उत्पादन क्षमता इस प्रकार है–

मासिक उत्पादनः– लगभग 3.20 लाख मीटर कपड़ा प्रतिमाह बुना जाता है।

वार्षिक उत्पादनः– कुल वार्षिक उत्पादन लगभग 38.50 लाख मीटर तक पहुंचता है।

समयः– एक जटिल डिजाइन वाली माहेष्वरी साड़ी तैयार करने में एक बुनकर को औसतन 7 से 10 दिन का समय लगता है।

2.वार्षिक आय और राजस्वः–इस उद्योग का आर्थिक प्रभाव स्थानीय स्तर पर बहुत बड़ा है:

कुल क्लस्टर टर्नओवरः–महेष्वर क्लस्टर का कुल वार्षिक उत्पादन मूल्य लगभग 93.16 करोड़ रूप्ए आंका गया है।

बुनकरों की कमाईः–एक 6– मीटर की साड़ी की बुनाई के लिए एक बुनकर को औसतन 800 से 1200 रू.तक की मजदूरी मिलती है। 16 साड़ियों के एक सेट की बुनाई पर बुनकर लगभग 10,000 से 12,000 रू.तक कमा लेते है।

साड़ी की लागतः–एक माहेष्वरी साड़ी को बनाने की कुल लागत (कच्चा माल और मजदूरी) लगभग 2000 से 3000 रू.के बीच आती है,जबकि बाजार में इसकी कीमत डिजाइन की जटिलता के आधार पर काफी अधिक होती है।

3.बाजार की स्थिति :– (2026 परिप्रेक्ष्य)

भारतीय साड़ी बाजार 2024 में 5.76 बिलियन डॉलर का था,जिसके 2026 और उसके बाद 6.70 प्रतिषत की वार्षिक दर (CAGR) से बढ़ने का अनुमान है।

हाथ से बनी साड़ियों की बढ़ती मांग और ई–कामर्स प्लेटफार्म्स की सुलभता ने माहेष्वरी बुनकरों की सीधी आय में वृध्दि की है।

माहेष्वरी साड़ी उद्योग के उपलब्ध जानकारी स्थानीय क्लस्टर स्तर पर वार्षिक टर्नओवर या किसी विषेष वित्तीय वर्ष के आंकड़े प्रदान करती है।

उपलब्ध डेटा और रूझान

2014 में आय में वृध्दिः 2011–12 में बुनकरों की प्रति साड़ी औसत आय **313** रू. थी, जो 2014–15 में बढ़कर **515** रू. प्रति साड़ी हो गई।

2015 का अनुमानः वस्त्र मंत्रालय की 2015 की एक रिपोर्ट के अनुसार महेष्वरी क्लस्टर में लगभ **2668** करघे थे और लगभग 8000 बुनकर प्रतिवर्ष लगभग 32 लाख मीटर कपड़े का उत्पादन कर रहे थे।

2023 की आयः 2023 तक एक साधारण बॉडर वाली मूल साड़ी के लिए बुनकरों की औसत आय बढ़कर लगभग **800** रू. हो गई।

वर्तमान अनुमान 2025:

नवीनतम अनुमानों के अनुसार महेष्वर क्लस्टर का कुल वार्षिक उत्पादन मूल्य लगभग 93.16 करोड़ रू.है, जिसमें लगभग 3120 करघे और 9360 बुनकर षामिल है।

तालिका क्रमांक – 01

हथकरघा उद्योग– बाजार की स्थिति

वर्ष	2011–12	2014–15	2023–24	वृध्दि प्रतिषत में
प्रति साड़ी औसत आय	313	515	800	39.22
हाथ करघे	2200	2668	3120	29.48
बुनकरों की संख्या	7905	8000	9360	15.54

स्रोतः–

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पिछले 12 वर्षों में प्रति साड़ी आय में वृध्दि देखी गई है,यद्यपि महंगाई के अनुपात में कम है। लगभग 39.22 प्रतिषत आय हुई । साड़ी व्यवसाय में लाभ मार्जिन व्यापक रूप से भिन्न हो सकता है,जो 10 प्रतिषत से 100 से अधिक तक हो सकता है। थोक में बेची जाने वाली कम कीमत वाली साड़ियों

पर मार्जिन कम लगभग10 से 20 प्रतिषत हो सकता है। हाथ करघो की संख्या में भी हुई,वहीं बुनकरों की संख्या में कम वृध्दि हुई है।

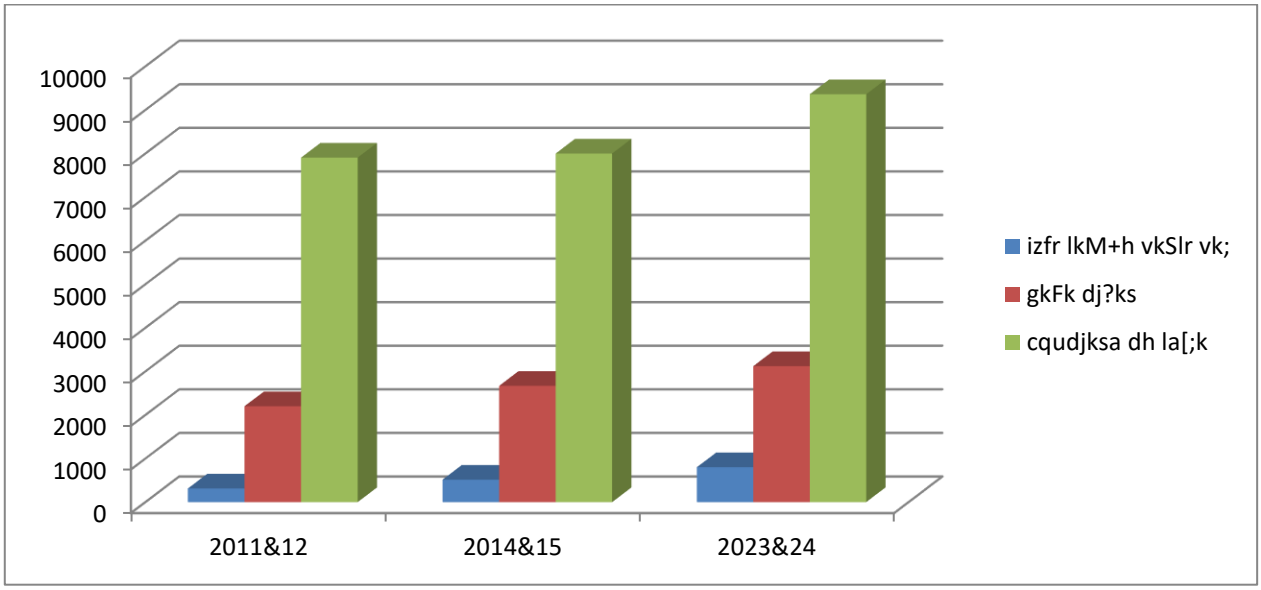

प्रमुख चुनौतियां:–

माहेष्वरी साड़ी उद्योग, अपनी ऐतिहासिक भव्यता के बावजूद, 2026 में कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसके विकास में बाधा बनने वाली प्रमुख चुनौतियों निम्नलिखित है–

1ण **पावरलूम से कड़ी प्रतिस्पर्धा:** सबसे बड़ी चुनौती सस्ते पावरलूम (बिजली के करघों) से मिल रही है। पावरलूम पर बनी साड़िया दिखने में हाथकरघा (Handloom)जैसी ही होती है,लेकिन वे बहुत कम समय और लागत में तैयार हो जाती है। आम ग्राहक असली और नकली के बीच फर्क नहीं कर पाते,जिससे असली हस्तषिल्प की मांग प्रभावित होती है।

2ण **कच्चे माल की बढ़ती लागत:** माहेष्वरी साड़ियों के लिए रेषम (Silk) और उच्च गुणवत्ता वाले सूती धागे (Cotton) की आवष्यकता होती है। पिछले कुछ वर्षों में कच्चे रेषम और सूती सूत की कीमतों में भारी उछाल आया है। इससे उत्पादन लागत बढ़ गई है,लेकिन उसी अनुपात मे बुनकरों का मुनाफा नहीं बढ़ पाया है।

3ण **कम मजदूरी और नई पीढ़ी का मोहभंग:** एक जटिल साड़ी बुनने में कई दिन लगते है, लेकिन उस श्रम के बदले मिलने वाली मजदूरी **(Wages)** अभी भी कम है। इस कारण बुनकरों की नई पीढ़ी इस पारम्परिक काम को छोड़कर षहरों की ओर पलायन कर रही है या अन्य क्षेत्रों में रोजगार तलाष रही है।

4ण **विपणन और बिचौलियों का प्रभाव:** आज भी कई बुनकर सीधे बाजार से नहीं जुड़े है। वे अपनी साड़ियां बिचौलियों या बड़े व्यापारियों को सस्ते में बेच देते है,जो आगे जाकर उन्हें ऊंचे दामों पर बेचते है। इससे असली मुनाफा बुनकर तक नहीं पहुंच पाता है।

5ण **भौगोलिक संकेत का उल्लंघन:** यद्यपि माहेष्वरी साड़ी को **GI** टेग प्राप्त है (जो प्रमाणित करता है कि असली माहेष्वरी साड़ी केवल महेष्वर में ही बन सकती है,) फिर भी अन्य क्षेत्रों में मषीन से बनी साड़ियों को माहेष्वरी के नाम पर बेचा जा रहा है। इसका सख्त क्रियान्वयन न होना एक बड़ी समस्या है।

6ण **आधुनिक डिजाइन और तकनीक का अभाव:** बदलते फैषन के साथ तालमेल बिठाने के लिए नए रंगों और डिजाइनों की आवष्यकता है। कई पारम्परिक बुनकर अभी भी पुराने तरीकों पर निर्भर है और उन्हे आधुनिक मार्केटिंग और ई–कामर्स का पर्याप्त ज्ञान नहीं है।

7ण इन चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार हथकरघा विकास आयुक्त के माध्यम से क्लस्टर विकास और मुद्रा ऋण जैसी योजनाएं चला रही है,लेकिन जमीनी स्तर पर अभी और प्रयासों की आवष्यकता है।

संभावित समाधान (Solutions)

इन चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार हथकरघा विकास आयुक्त के माध्यम से क्लस्टर विकास और मुद्रा ऋण जैसी योजनाएं चला रही है,लेकिन जमीनी स्तर पर अभी भी और प्रयासो की आवष्यकता है।

माहेष्वरी साड़ी उद्योग की चुनौतियों से निपटने और इसके उज्जवल भविष्य के लिए निम्नलिखित समाधान (Solutions) अपनाएं जा सकते है–

GI टैग का सख्त कियान्वयन और ब्रांडिंगः प्रमाणीकरणः–प्रत्येक असली साड़ी पर हैंडलूम मार्क और **GI** टैग (Geographical Indication) को अनिवार्य बनानाा चाहिए ताकि ग्राहक असली और नकली पावरलूम के बीच अंतर कर सकें।

जागरूकता अभियानः–उपभोक्ताओं को हस्तषिल्प के महत्व और षुध्दता की पहचान करने के बारे में षिक्षित किया जाना चाहिए।

उचित मजदूरी और सामाजिक सुरक्षाः मजदूरी में वृध्दिः–बुनकरों को उनके कौषल के अनुरूप बेहतर पारिश्रमिक मिलना चाहिए ताकि नई पीढ़ी इस कला से जुड़ी रहे।

कल्याणकारी योजनाएंः–बुनकरों को स्वास्थ्य बीमा, पेंषन और बच्चों की षिक्षा के लिए विषेष सरकारी सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

ई–कामर्स और सीधी बिक्रीः डिजिटल प्लेटफार्मः–बुनकरों को बिचौलियों से बचाने के लिए उन्हे सीधे **Amazon Karigar**, **Ajio**,और सरकारी पोर्टल IndiaHandloomBrand जैसे ई–कामर्स प्लेटफार्म से जोड़ा जाना चाहिए।

सरकारी समितियांः–बुनकरों के अपने स्वयं के संगठन (Self Help Groups) होने चाहिए जो सीधे बड़े षहरों की प्रदर्षनियों और फैषन षो में भाग ले सकें ।

तकनीकी और डिजाइन सहायताः आधुनिक डिजाइनः–बुनकरों को बदलते फैषन ट्रेंड्स के अनुसार नए कलर पैलेट और कंटेंपरेरी (आधुनिक) डिजाइन तैयार करने के लिए **NIFT (निफ्ट** जैसे संस्थानों से प्रषिक्षण दिलाना चाहिए। बेहतर करघेः–कम षारीरिक श्रम वाले उन्नत हथकरघों का उपयोग करना चाहिए जिससे गुणवत्ता प्रभावित किए बिना उत्पादन बढ़ सकें ।

कच्चे माल की सब्सिडीः सस्ता कच्चा मालः–सरकार को 'यार्न बैंक' (Yarn Bank) के माध्यम से रेषम और सूती धागे रियायती दरों पर सीधे बुनकरों को उपलब्ध कराने चाहिए,ताकि उत्पादन कम हो सके।

निर्यात को प्रोत्साहनः वैष्विक बाजारः–माहेष्वरी साड़ी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमोट करने के लिए विदेषी हस्तषिल्प मेलों में स्थान दिया जाना चाहिए। इसके लिए निर्यात प्रकिया को सरल बनाना आवष्यक है।

यदि इन समाधानों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है,तो न केवल बुनकरों की आय बढ़ेगी, बल्कि महारानी अहिल्याबाई होल्कर की यह अनमोल विरासत भी सुरक्षित रहेगी।

निष्कर्षः–

माहेष्वरी साड़ी उद्योग एक कलात्मक और पारम्परिक हथकरघा उद्योग है,जो अपनी विरासत को बनाए रखने के साथ–साथ आधुकिन चुनौतियो का सामना कर रहा है,और इसके संरक्षण के लिए जागरूता और समर्थन की आवष्यकता है।

माहेष्वरी हैंडलूम व्यवसाय न केवल कला और संस्कृति का प्रतीक है,बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए आर्थिक सुरक्षा और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। यह व्यवसाय सांस्कृतिक विरासत और पहचान, आर्थिक महत्व

और रोजगार सृजन, अनूठी कारीगरी और गुणवत्ता, पर्यावरण के अनुकूल और पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक है।

वहीं जिले के बकावां षिवलिंग हस्तषिल्प कला आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हस्तषिल्प कला षिवलिंग आध्यात्मिक षक्ति कलात्मक सुंदरता और व्यक्तिगत भक्ति का एक अनूठा संगम है,जो भक्तों के जीवन पर गहरा महत्व रखता है। बकावां की हस्तषिल्प कला केवल पत्थर तराषने का काम नहीं है,बल्कि यह श्रध्दा, परंपरा और उत्कृष्ट कारीगरी का एक संगम है जो भगवान षिव के निराकार रूप को साकार करता है। लेकिन वर्तमान में अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। यदि नागरिक एवं सरकारी समर्थन मिले तो निष्चित रूप से अपनी विरासत को बनाएं रखने में सफल होगा ।

बकावां सें बने नर्मदेष्वर षिवलिंग का निर्यात पूरी दुनिया में किया जाता है। यह हस्तषिल्प न केवल स्थानीय रोजगार का साधन मात्र है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत को भी वैष्विक स्तर पर पहचान दिलाता है।

वोकल फॉर लोकल भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिषा में एक महत्वपूर्ण अभियान है। इसका मुख्य अर्थ न केवल स्थानीय उत्पादों का उपयोग करना है,बल्कि गर्व के साथ उनका प्रचार करना भी है। वर्ष 2026 में, यह अभियान **"विकसित भारत"** के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और भी प्रासंगिक हो गया है।

वोकल फॉर लोकल केवल एक नारा नहीं,बल्कि देष की अर्थव्यवस्था को जमीनी स्तर से मजबूत करने और भारतीय प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने का एक सषक्त माध्यम है।

सन्दर्भ सूचीः–

1- Sandhya Rani and Das, (2015) Socio-Economic Profile of Handloom Weaving Community: A Case Study of Bargarh District, Odisha, Disseveration, National Institute Of Technology, Rourkela, Sundargarh - 769008, Odisha, India, Hanks, P. (ed.) (1979) Collins dic volume – 7) issue- 9, june- 2018
2- Campbell Colin (2005) The craft consumer: Culture, craft ad consumption in a post-modern society, Journal of Consumer Culture, Vol.5 (1), pp. 23-42
3- Rao k.s.n. and Rao T.U.M.(2015) An analysis of Handloom industry in Andhra Pradesh Challenges vs government Schemes,International journal of Engineering Technplogy Science and Research (IJETSR),ISSIN 2394-3386,Vol .2(9)
4- राव,डॉ.मनीषा (2022)षोध निर्देषक,लोधी राजकीय महिला महाविद्याल बरेली उत्तर प्रदेष,भारतीय हस्तषिल्प का इतिहास । Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal © 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2581. 6306 138
5- भट्ट, डॉ.स्निग्धा – महेष्वरी साड़ी उद्योग मे उत्पादन की स्थिति, रिव्यूव और रिसर्च
6- लघु उद्योग कि विकास के लिए सुविधाएं एवं सेवाएं–विकास, आयुक्त लघु उद्योग, नई दिल्ली (जुलाई–90)
7- "हथकरघा उद्योग"–हथकरघा संचालनालय म.प्र.ष्षासन ग्रामोउद्योग विभाग,भोपाल (म.प्र.)
8- महेष्वर एक परिचय– 2001–2002 प्रकाषक, षासकीय हथकरघा प्रषिक्षण केन्द्र महेष्वर ।
9- हथकरघा उद्योग "नया जीवन नया रूप" हथकरघा विकास आयुक्त, उद्योग मंत्रालय भारत सरकार जुलाई,1978।
10- https://shreerevanarmadeshwarshivling.in